B. A. 3rd year
प्राकृतिक तंतु के प्रकार

प्राकृतिक तंतुओं को उनके श्रोत के आधार पर निम्नांकित दो भागों में बांटा जा सकता है।

(i) पादप तंतु

(ii) जांतव तंतु (एनीमल फाइवर)

(i) पादप तंतु (प्लांट फाइवर)

पादपों से प्राप्त होने वाले तंतु को पादप तंतु या प्लांट फाइवर कहा जाता है। जैसे सूत, जूट या पटसन, फ्लेक्स, नारियल के रेशे, आदि।

(ii) जांतव तंतु (एनीमल फाइवर)

जंतुओं से प्राप्त होने वाले तंतु को जांतव तंतु या एनीमल फाइवर कहा जाता है। जैसे ऊन तथा रेशम (सिल्क)।

हमें ऊन भेड़ अथवा बकरी के रोएं से प्राप्त होता है। इसके अलावे खरगोश, याक तथा ऊँट, आदि के रोएं से प्राप्त होता है। भेड़, बकरी, खरगोश, याक, ऊँट आदि जानवरों के शरीर पर मोटे रोएं होते हैं। शरीर के ये मोटे रोएं बाहर की ठंढ़क को शरीर के अंदर नहीं प्रवेश करने देते हैं तथा शरीर की गर्मी को बाहर नहीं निकलने देते हैं अर्थात इंसुलेटर का काम करते हैं। ये रोएं इन जानवरों को खराब मौसम से विशेषकर ठंढ से बचाते हैं। इनके शरीर के ये रोएं फ्लीस कहलाते हैं। फ्लीस को काट लेने पर इन्हीं रोएं को ऊन कहा जाता है।

रेशम हमें रेशम के कीड़ों के कोकून से प्राप्त होता है। रेशम की खोज सर्वप्रथम चीन में की गई थी।

कुछ पादप तंतु

रूई (कॉटन) तथा रूई की खेती (कपास तथा कपास की खेती)

भारत में रूई की जानकारी 1800 ई0पू0 से ही थी। रूई को कपास भी कहा जाता है। रूई के पौधे खेतों में ऊगाए जाते हैं। रूई को कपास भी कहा जाता है। रूई को अंग्रेजी में कॉटन (cotton) कहा जाता है।

Dr Manisha Rao
Associate Professor-Home Science